मध्य एशियाई पुरावशेष वीथिका

राष्ट्रीय संग्रहालय के भारतीयेतर मूल के संग्रह में मध्य एशियाई पुरावशेष संग्रह रेशम पथ की सांस्कृतिक विविधता को दर्शाता है। इस संग्रह में उत्कृष्ट भित्तिचित्र, रेशम के चित्रित बैनर; काष्ठ और गच की मूर्तियां एवं मृण्मूर्तियां; सिक्के, पोर्सीलेन और मृद्भांड; सोने और चांदी की मूल्यवान वस्तुएं, धार्मिक और लौकिक प्रकार के दस्तावेज हैं। इस संग्रह को आरंभिक 20वीं शताब्दी के अग्रगण्य पुरातत्त्व अन्वेषकों मे से एक सर ऑरेल स्टाइन द्वारा 1900–1901, 1906–1908 और 1913–1916 के तीन प्रमुख अभियानों में उत्खनित, अन्वेषित और संकलित किया गया था। इस वीथिका में 600 चुनी हुई कलाकृतियां प्रदर्शित हैं।

मुद्रा वीथिका

राष्ट्रीय संग्रहालय के सिक्कों का संग्रह अपनी विविधता, दुर्लभता और पुरातनता के कारण उत्कृष्ट है। वीथिका में छठी शताब्दी ई.पू. से 21वीं शताब्दी के आरंभ तक के भारतीय सिक्कों का इतिहास, सिक्कों के निर्माण की विविध तकनीकों से संबंधित डायोरामा के साथ विवेचित है। इसमें प्राचीनतम छड़नुमा सिक्कों और आहत सिक्कों से लेकर भारतीय राज्यों, ब्रिटिश इंडिया और स्वातंत्र्योत्तर भारत के सिक्के प्रदर्शनार्थ रखे गए हैं। इन सिक्कों के इतिहास से भारतीय मुद्रा प्रणाली की कौड़ी से लेकर क्रेडिट कार्ड तक की यात्रा उद्‌घाटित होती है। ये सिक्के प्राचीन, मध्यकालीन और आधुनिक भारत के इतिहास के विभिन्न पक्षों को दर्शाने वाले प्रामाणिक स्त्रोत हैं।

तंजौर और मैसूर के चित्र वीथिका

यह वीथिका दक्षिण भारत की दो प्रसिद्ध शैलियों – तंजौर और मैसूर का प्रतिनिधित्व करती है। इस वीथिका में पौराणिक कथाओं, महाकाव्यों के आख्यानों और विभिन्न देवी–देवताओं से संबंधित चित्र प्रदर्शित हैं। सात चित्रों के माध्यम से तंजौर शैली के चित्र बनाने की तकनीक भी दर्शाई गई है।

अन्य सेवाएं :

90 मिनटों में राष्ट्रीय संग्रहालय का भ्रमण
इस निःशुल्क हस्तपुस्तिका की एक प्रति लें और संग्रहालय की चुनी हुई कलाकृतियों को देखने के लिए निकल पड़ें।

ऑडियो गाइड
5 भाषाओं में उपलब्ध ऑडियो गाइड से संग्रहालय की चुनी हुई कलाकृतियों के विषय में जानकारी हासिल करें।

क्लोक रूम
मुख्य द्वार के समीप स्थित क्लोक रूम की सुविधा लाभ उठाएं।

म्यूज़ियम शॉप
भूतल और प्रथम तल स्थित म्यूज़ियम शॉप पर जाएं।

जलपान
कैफे और स्नैक बार में जलपान की व्यवस्था है।

विशेष रूप से सक्षम व्यक्ति :
कृपया स्वागत कक्ष पर व्हील चेयर उपलब्ध कराने के लिए कहें। लिफ्ट की सेवा भी उपलब्ध है।

राष्ट्रीय संग्रहालय
नई दिल्ली

वीथिकाएं

द्वितीय तल

1. वस्त्र एवं परिधान
2. पूर्व कोलंबियाई एवं पश्चिमी कलाएं
3. ताम्रपत्र
4. वाद्ययंत्र
5. काष्ठ उत्कीर्णन
6. जनजातीय जीवन-शैली
7. अस्त्र-शस्त्र एवं कवच
8. परंपरा, कला एवं निरंतरता

वस्त्र एवं परिधान वीथिका

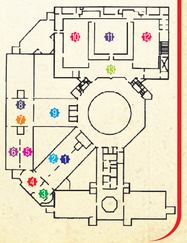

वस्त्र एवं परिधान वीथिका में परवर्ती मुग़ल काल के भारतीय पारंपरिक वस्त्रों का सुन्दर संग्रह प्रदर्शित है। यहां सुन्दर ढंग से बुने हुए, छपे हुए, रंगे हुए और कढ़ाई युक्त सूती, रेशमी और ऊनी वस्त्रों के 132 चुने हुए प्रतिमान प्रदर्शित हैं। इन्हें निर्माण और सतही अलंकरण तकनीक के अनुसार व्यवस्थित किया गया है। हाथ से तैयार किए गए कुछ उत्कृष्ट प्रदर्श हैं – चंदेरी, मध्य प्रदेश से प्राप्त 17वीं शताब्दी के मध्य का रेशम और ज़री के काम से युक्त साड़ी का पल्लू ; गोलकुंडा, दक्षिण भारत से प्राप्त 17वीं शताब्दी का कलात्मक डिजाइन से युक्त छपा और रंगा हुआ सूती आवरण ; और विभिन्न वस्त्रों को उनके विविध उपयोगों के साथ दर्शाता राजसी कक्ष का मॉडल।

पूर्व कोलंबियाई एवं पश्चिमी कलाएं वीथिका

पूर्व कोलंबियाई और पश्चिमी कलाएं संग्रह की अधिकतर कलाकृतियां मेक्सिको, मध्य अमेरिका और पेरु के पश्चिमी तटीय और पहाड़ी क्षेत्रों का प्रतिनिधित्व करती हैं। राष्ट्रीय संग्रहालय का यह पूर्व कोलंबियाई कलाकृति संग्रह नस्ली हीरामानेक और उनकी पत्नी द्वारा उनके पिता मुचेरशा हीरामानेक की स्मृति में दानस्वरूप दिया गया था। इस संग्रह में हीरामानेक द्वारा 30 वर्षों की अवधि में कलाकृति बाज़ार और अन्य स्त्रोतों से बड़ी सावधानी और उत्साह से ख़रीदी गई 536 कलाकृतियां हैं।

काष्ठ उत्कीर्णन वीथिका

काष्ठ उत्कीर्णन संग्रह की आरंभिकतम कलाकृति कटरमल (ज़िला अलमोड़ा, उत्तराखंड) के सूर्य मंदिर का सुन्दर ढंग से उत्कीर्णित और अभिलिखित द्वार और स्तंभ है जो परवर्ती मध्यकालीन वीथिका में प्रदर्शित है। काष्ठ उत्कीर्णन वीथिका (द्वितीय तल) में मुख्यतः 17वीं से 19वीं शताब्दी की भारत की काष्ठ उत्कीर्णन परंपरा को उद्‌घाटित किया गया है। वीथिका में प्रदर्शित आनुष्ठानिक और लौकिक प्रकार की 82 कलाकृतियां राजस्थान, गुजरात, उड़ीसा और दक्षिण भारत की भिन्न-भिन्न काष्ठ उत्कीर्णन शैलियों के उदाहरण प्रस्तुत करती हैं। इस वीथिका के आकर्षण हैं – गुजरात का सत्रहवीं शताब्दी का सूक्ष्म उत्कीर्णित और चित्रित मंदिर का मंडप, नक्काशी किए हुए और चित्रित लघुफलक, हाथी दांत से मढ़ी हुई मंजूषा, दैनिक उपयोग में आने वाली वस्तुएं, दरवाज़े, खिड़कियां और आंध्र प्रदेश, कर्नाटक, तमिलनाडु, नेपाल और मध्य एशिया की सुंदर ढंग से उत्कीर्णित बुद्ध प्रतिमाएं।

वाद्ययंत्र वीथिका

संग्रहालय में वाद्ययंत्रों का विशाल संग्रह है। वाद्ययंत्र वीथिका में प्रदर्शित वाद्ययंत्र पद्मश्री स्वर्गीय श्रीमती शरण रानी बाकलीवाल द्वारा 1980, 1982 और 2003 में संग्रहालय को दानस्वरूप दिए गए थे। यहां 19वीं शताब्दी के पश्चिमी शैली के वाद्ययंत्र भी प्रदर्शित हैं। वीथिका में प्रदर्शित इन वाद्ययंत्रों को तार वाद्ययंत्र (वीणा, सितार, संतूर), थाप देकर बजाए जाने वाले वाद्ययंत्र (तबला, ढोलक, आदि) और फूंक मार कर बजाए जाने वाले वाद्ययंत्र (बांसुरी, तुरही, आदि) जैसी भिन्न-भिन्न श्रेणियों में रखा गया है। यहां 207 वाद्ययंत्र प्रदर्शनार्थ रखे गए हैं।

उत्तर-पूर्व भारत की जनजातीय जीवन शैली वीथिका

इस वीथिका में 'सप्तभगिनी प्रदेश' में निवास करने वाले विविध जनजातीय समूहों के परिधान, शिरोवस्त्र, आभूषण, चित्र, टोकरी बुनाई कार्य, काष्ठ उत्कीर्णन, स्मोकिंग पाइप और निजी अलंकरण, आदि से संबंधित कुल 335 उत्कृष्ट पारंपरिक वस्तुएं प्रदर्शित हैं।

अस्त्र-शस्त्र और कवच वीथिका

संग्रहालय में भारतीय अस्त्र-शस्त्र एवं कवचों का उत्कृष्ट संकलन है। इनमें नोकयुक्त हथियार, प्रक्षेपास्त्र, मानव और पशु कवच, अलंकृत और आनुष्ठानिक हथियार, आग्नेयास्त्र और युद्ध से संबंधित सहायक सामग्री को प्रदर्शनार्थ रखा गया है। वीथिका में मुख्य रूप से मुगल अस्त्र-शस्त्र प्रदर्शित हैं। इसके अतिरिक्त मराठा, सिक्ख, राजपूत और हिन्दू अस्त्र-शस्त्रों का भी पर्याप्त प्रतिनिधित्व है। यहां दमिश्की काम, मीनाकारी, जालीदार काम अथवा अभिलिखित या मूल्यवान रत्नों से खचित अस्त्र-शस्त्र भी हैं। इस वीथिका में 500 कलाकृतियां प्रदर्शित हैं।

परंपरा, कला एवं निरंतरता वीथिका

इस वीथिका में भारत के विभिन्न जनजातीय समुदायों की कला और परंपरा के उदाहरण प्रदर्शित हैं। यहां मानव-शास्त्र संग्रह की भिन्न-भिन्न विषय-वस्तु से संबंधित लगभग 250 कलाकृतियां प्रदर्शनार्थ रखी गई हैं जिन्हें विविध प्रकार की सामग्री से तैयार किया गया है।

संग्रहालय तक कैसे पहुंचें

- **पता : राष्ट्रीय संग्रहालय, जनपथ, नई दिल्ली - 110 011**
- **बस रूट :** राष्ट्रीय संग्रहालय बस स्टॉप, 505, 521, 522, 615
  हो हो बस सर्विस (दिल्ली टूरिज्म सर्विस)
  निर्माण भवन बस स्टॉप : 47, 166, 181, 408, 410, 970, 980
- **निकटस्थ मेट्रो स्टेशन** : उद्योग भवन और केन्द्रीय सचिवालय
- **पार्किंग** : राष्ट्रीय संग्रहालय परिसर में पार्किंग की व्यवस्था नहीं है। तथापि, बिल्कुल पास में ही भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण की पार्किंग का लाभ उठाया जा सकता है।

अवस्थिति मानचित्र

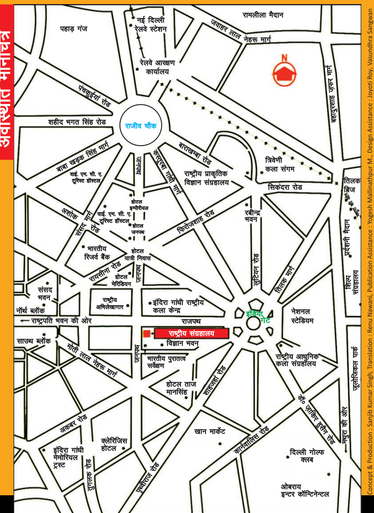

Concept & Production : Sanjib Kumar Singh, Translation : Renu Nawani, Publication Assistance : Yogesh Mallinathpur M., Design Assistance : Joyoti Roy, Vasundhra Sangwan

सामान्य सूचना

प्रवेश : प्रातः 10 बजे से सायं 5.00 बजे
(सोमवार और राष्ट्रीय अवकाशों पर बंद)

प्रवेश शुल्क :

भारतीय नागरिक : ₹ 10/- प्रति व्यक्ति
विदेशी नागरिक : ₹ 300/- प्रति व्यक्ति
विद्यार्थी : ₹ 1/- प्रति विद्यार्थी (पहचान-पत्र दिखलाने पर)

स्थिर कैमरा शुल्क (स्टैंड के बिना)

भारतीय नागरिक : ₹ 20/- प्रति कैमरा
विदेशी नागरिक : ₹ 300/- प्रति कैमरा

वीडियो कैमरा की अनुमति नहीं है

प्रतिदिन निम्न समय पर निःशुल्क गाइडिड टूर उपलब्ध हैं :
मंगलवार से शुक्रवार
पूर्वाह्न 10.30 और अपराह्न 2.30 बजे
शनिवार-रविवार
पूर्वाह्न 10.30, 11.30, अपराह्न 2.30 और 3.00 बजे

www.nationalmuseumindia.gov.in

राष्ट्रीय संग्रहालय
जनपथ, नई दिल्ली – 110 011, भारत

परिचय

राष्ट्रीय संग्रहालय भारत के मुख्य संग्रहालयों में से एक है। यहां देश और विदेश की कलाकृतियों का महत्त्वपूर्ण संग्रह है। 15 अगस्त, 1949 के शुभ दिन राष्ट्रपति भवन, नई दिल्ली के दरबार हॉल में राष्ट्रीय संग्रहालय स्थापित किया गया था। बाद में इस प्रयोजन हेतु उपयुक्त नए भवन का निर्माण किया गया और बढ़े हुए संकलन को इस भवन में अंतरित कर दिया गया। यहां वैज्ञानिक पद्धति से कलाकृतियों को प्रदर्शनार्थ रखा गया है। 18 दिसम्बर, 1960 को यह संग्रहालय जनसामान्य के अवलोकनार्थ खोल दिया गया।

संप्रति राष्ट्रीय संग्रहालय संग्रह में भारतीय और विदेशी मूल की 2 लाख से अधिक उत्कृष्ट कलाकृतियां हैं जिनमें हमारी समृद्ध सांस्कृतिक विरासत के 5000 वर्षों से भी अधिक का इतिहास समाया हुआ है। इनमें प्रस्तर, कांस्य और काष्ठ प्रतिमाएं; मृण्मूर्तियां; लघुचित्र और पांडुलिपियां; सिक्के; अस्त्र-शस्त्र और कवच; आभूषण; वस्त्र और परिधान और मानव-शास्त्र से संबंधित कलाकृतियां हैं। भारतीयेतर मूल के संग्रह में मध्य एशियाई और पूर्व कोलंबियन कलाकृतियां आती हैं। यह संग्रहालय भारत की सामासिक संस्कृति का प्रतिनिधित्व करने वाली कलाकृतियों का खज़ाना है।

राष्ट्रीय संग्रहालय के अन्य विभाग हैं - प्रकाशन, हिन्दी, शिक्षा, पुस्तकालय, प्रदर्शनी, मॉडलिंग, फोटोग्राफी, सुरक्षा और अनुरक्षण, प्रशासन और जनसंपर्क। राष्ट्रीय संग्रहालय की सुपरिकृत संरक्षण प्रयोगशाला द्वारा कलाकृतियों का पुनःस्थापन तो किया ही जाता है साथ ही साथ विद्यार्थियों और सुपात्र व्यावसायिकों को प्रशिक्षण संबंधी सुविधाएं भी उपलब्ध कराई जाती हैं।

वीथिकाएं

भूतल

1. प्रवेश हॉल
2. पुस्तकालय
3. ऑडिटोरियम
4. हड़प्पा सभ्यता
5. मौर्य, शुंग एवं सातवाहन कला
6. कुषाण (गंधार, मथुरा एवं इक्ष्वाकु कला)
7. गुप्त कालीन कला
8. गुप्तकालीन मृण्मूर्तियां एवं आरंभिक मध्यकालीन कला
9. कांस्य प्रतिमाएं
10. परवर्ती मध्यकालीन कला
11. बौद्ध कला
12. भारतीय लघुचित्र
13. भारतीय लिपियों एवं सिक्कों से संबंधित पारदर्शियां
14. सुसज्जा कलाएं - II
15. सुसज्जा कलाएं - I
16. आभूषण वीथिका

हड़प्पा वीथिका

यह वीथिका भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण और राष्ट्रीय संग्रहालय द्वारा संयुक्त रूप से लगाई गई थी। यहां हड़प्पा सभ्यता के स्थलों से प्राप्त शिल्पतथ्यों का विशाल संकलन है। इसमें मृदभांड, मुद्राएं, गुटिकाएं, बाट और बटखरे, आभूषण, मृण्मय लघुप्रतिमाएं, खिलौने, आदि हैं। वीथिका में हड़प्पा स्थलों से प्राप्त कुल्हाड़ियां, छेनियां, चाकू, आदि जैसे ताम्र उपकरण भी प्रदर्शनार्थ रखे गए हैं। हड़प्पा वीथिका में राष्ट्रीय संग्रहालय संकलन की लगभग 3,800 कलाकृतियां प्रदर्शित हैं। इस वीथिका में भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण द्वारा भारत स्थित हड़प्पा स्थलों से उत्खनित 1025 शिल्पतथ्य भी प्रदर्शनार्थ रखे गए हैं।

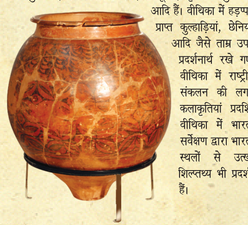

पुरातत्त्व वीथिकाएं

भूतल स्थित पुरातत्त्व वीथिकाओं ; भूतल, प्रथम तल और द्वितीय तल के रोटुन्डा ; और संग्रहालय भवन के चारों ओर लगभग 853 मूर्तियां प्रदर्शित हैं। इनमें अधिकतर प्रस्तर एवं कांस्य प्रतिमाएं और मृण्मूर्तियां हैं जो तीसरी शताब्दी ई.पू. से 19वीं शताब्दी तक के सभी प्रमुख क्षेत्रों, कालों और कला शैलियों का प्रतिनिधित्व करती हैं।

बौद्ध कला वीथिका

संग्रहालय का एक अतिरिक्त आकर्षण है - बौद्ध कला वीथिका। यहां पिपरहवा, ज़िला सिद्धार्थ नगर, उत्तर प्रदेश से प्राप्त बुद्ध के पवित्र अवशेषों (पांचवीं-चौथी शताब्दी ई.पू.) को प्रदर्शित किया गया है। इस वीथिका में प्रस्तर, कांस्य, मृण्मय, गच और काष्ठ प्रतिमाओं और पट्टचित्रों जैसे 82 प्रदर्श बौद्ध कला का प्रतिनिधित्व करते हैं। यहां नेपाल, तिब्बत, मध्य एशिया, म्यांमार, जावा और कम्बोडिया की बौद्ध कला के उदाहरण प्रदर्शनार्थ रखे गए हैं। यहां प्रदर्शित महत्त्वपूर्ण कलाकृतियों में हैं - कपर्दिन बुद्ध (अहिच्छत्र), बुद्धपाद (नागार्जुनकोंडा, ज़िला गुंटूर, आंध्र प्रदेश), बुद्ध के जीवन-दृश्य (सारनाथ, उत्तर प्रदेश) तथा हिमालय पार के क्षेत्र से प्राप्त आनुष्ठानिक वस्तुएं। ये कलाकृतियां भक्ति, निष्ठा और मानवता के प्रति प्रेम भावना जागृत करती हैं।

भारतीय लघुचित्र वीथिका

राष्ट्रीय संग्रहालय के संकलन में 17000 से अधिक चित्र हैं। इनमें से चुने हुए लघुचित्रों को ही प्रदर्शित किया गया है। ये लघुचित्र 1000 ई. से 1900 ई. तक की मुगल, दकनी, मध्य भारतीय, राजस्थानी, पहाड़ी और अन्य उपशैलियों के हैं। इनमें ताड़पत्र, कपड़े, काष्ठ और चमड़े पर बनाए गए चित्र; चित्रित पांडुलिपियां ; काष्ठ और गत्ते के आवरण और पंखा, आदि भी शामिल हैं। इन लघुचित्रों की मुख्य विषय-वस्तु है - जैन कल्पसूत्र ; रामायण, महाभारत, आदि जैसे महाकाव्य ; भागवतपुराण ; दुर्गासप्तशती ; जयदेव रचित गीतगोविन्द ; रागमाला ; बारामासा ; और पंचतंत्र। इसके अतिरिक्त शाहनामा और बाबरनामा जैसी इंडो-इस्लामिक पांडुलिपियां भी उल्लेखनीय हैं। इस विशाल संग्रह में मध्यकाल के राजाओं, शासकों और संतों के पोट्रेट भी हैं। इस वीथिका में 352 कलाकृतियां प्रदर्शित हैं।

भारतीय लिपियों एवं सिक्कों का विकास वीथिका

इस वीथिका में बड़े आकार की 26 सुसज्जित कांच की पारदर्शियों के माध्यम से भारतीय लिपियों और सिक्कों की विकास-यात्रा दिखलाई गई है।

सुसज्जा कलाएं वीथिकाएं

दो वीथिकाओं में परवर्ती मुगल (17वीं शताब्दी से) की भौतिक संस्कृति को उद्घाटित करने वाली तीन सौ अड़तीस उत्कृष्ट कलाकृतियां प्रदर्शित हैं। विविध अलंकरणात्मक तकनीकों से सुसज्जित ये हस्तनिर्मित कलाकृतियां काष्ठ, कांच, सिरामिक, यशब, हाथी दांत और भिन्न-भिन्न प्रकार की धातुओं से निर्मित हैं।

हाथी दांत पर उत्कीर्णित बुद्ध के जीवन दृश्य, जालीदार आवरण के भीतर ध्यान मुद्रा में बैठे हुए बुद्ध, हाथी दांत का गृह मंदिर, यशब निर्मित पात्र, सिरामिक की वस्तुएं, टाइल्स, हाथी दांत और बहुमूल्य रत्नों से निर्मित शतरंज और चौपड़ की बिसात, आदि सुसज्जा कलाएं वीथिका I में प्रदर्शित महत्त्वपूर्ण कलाकृतियां हैं। बारीकी से उत्कीर्णित काष्ठनिर्मित रंगी हुई गरुड़ आकृति, पक्षी के आकार का चांदी का हुक्का, चांदी की परफ्यूम ट्रे, इनेमल किए हुए पात्र, बिदरी का मोमबत्ती स्टैंड, संगमरमर की पच्चीकारी से युक्त तश्तरी, रंगे हुए कांच का कटोरा, आदि सुसज्जा कलाएं वीथिका II में प्रदर्शित हैं।

आभूषण वीथिका (अलंकार)

राष्ट्रीय संग्रहालय में भारतीय आभूषणों का विशाल संग्रह है। इस वीथिका में प्रदर्शित 250 से अधिक आभूषण मर्दे भारतीय आभूषणों की कहानी कहती हैं। यहां मोहनजोदड़ो और हड़प्पा की मनकों की माला, देवी-देवताओं की प्रतिमाओं को सजाने वाले आभूषण, कभी मुगल बादशाहों और महाराजाओं के खज़ाने में रहे आभूषण, आदि प्रदर्शित हैं। ये आभूषण सीप, हाथी दांत, सोने और चांदी से निर्मित हैं और हीरे-मोती और रत्नों से जटित हैं। राष्ट्रीय संग्रहालय का आभूषण संग्रह भारतीय आभूषणों के भिन्न-भिन्न रूपों, डिजाइन के सौन्दर्य और भारतीय शिल्पकारों की कलात्मक उत्कृष्टता के उदाहरण प्रस्तुत करता है।

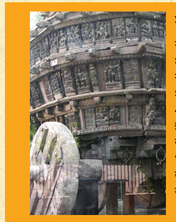

मंदिर रथ (संग्रहालय के प्रवेश-द्वार के समीप)

संग्रहालय के प्रवेश द्वार के समीप भगवान विष्णु को समर्पित शाल की लकड़ी का अष्टपार्श्वीय रथ प्रदर्शनार्थ रखा गया है। यह दक्षिण भारत में तमिलनाडु के कुंभकोणम का है। 19वीं शताब्दी के मध्य काल का यह मंदिर रथ छह पहियों, लगभग 425 उत्कीर्णित फलकों, ब्रैकेट, प्रलम्बनों, आदि से युक्त है। इसका भार 2,200 कि.ग्रा. है। पांच तलों वाले इस रथ की बाहरी दीवारें सूक्ष्म उत्कीर्णित लघुफलकों से सज्जित हैं जिनमें भगवान विष्णु के विभिन्न रूप, लक्ष्मी-नारायण, भगवान विष्णु के राम, नरसिंह और कृष्ण अवतार एवं कृष्ण के जीवन-दृश्य उत्कीर्णित हैं।

वीथिकाएं

प्रथम तल

1. विशेष प्रदर्शनी हॉल I
2. पांडुलिपियां
3. पांडुलिपियां
4. मध्य एशियाई पुरावशेष - II
5. मध्य एशियाई पुरावशेष - I
6. सिक्के
7. तंजौर और मैसूर के चित्र
8. सामुद्रिक विरासत
9. विशेष प्रदर्शनी हॉल II

पांडुलिपियां (नवीकरणाधीन) वीथिका

राष्ट्रीय संग्रहालय संकलन में भिन्न-भिन्न भाषाओं और लिपियों में लिखित अनेक पांडुलिपियां हैं। इनकी विषय-वस्तु अलग-अलग है। ये पांडुलिपियां भिन्न-भिन्न शैलियों और प्रांतों का प्रतिनिधित्व करती हैं। इनमें से लगभग 1000 सचित्र पांडुलिपियां हैं। शेष पांडुलिपियां सुलिखित हैं। इन पांडुलिपियों के अनेक चित्रों और मूलपाठ में स्वर्ण-पत्र का इस्तेमाल किया गया है। ये पांडुलिपियां कला और अन्य संबंधित विषयों के शोध का महत्त्वपूर्ण स्त्रोत हैं। 7वीं से 20वीं शताब्दी की कालावधि का प्रतिनिधित्व करने वाली ये पांडुलिपियां चर्मपत्र, भूर्जपत्र, ताड़पत्र, कागज़, कपड़े, काष्ठ और धातु, आदि पर लिखी गई हैं। ये संस्कृत, पालि, प्राकृत, फारसी, अरबी, चीनी, बर्मी या तिब्बती भाषाओं में हैं।